हजारीप्रसाद द्विवेदी

ज्ञान का आलोकपर्व

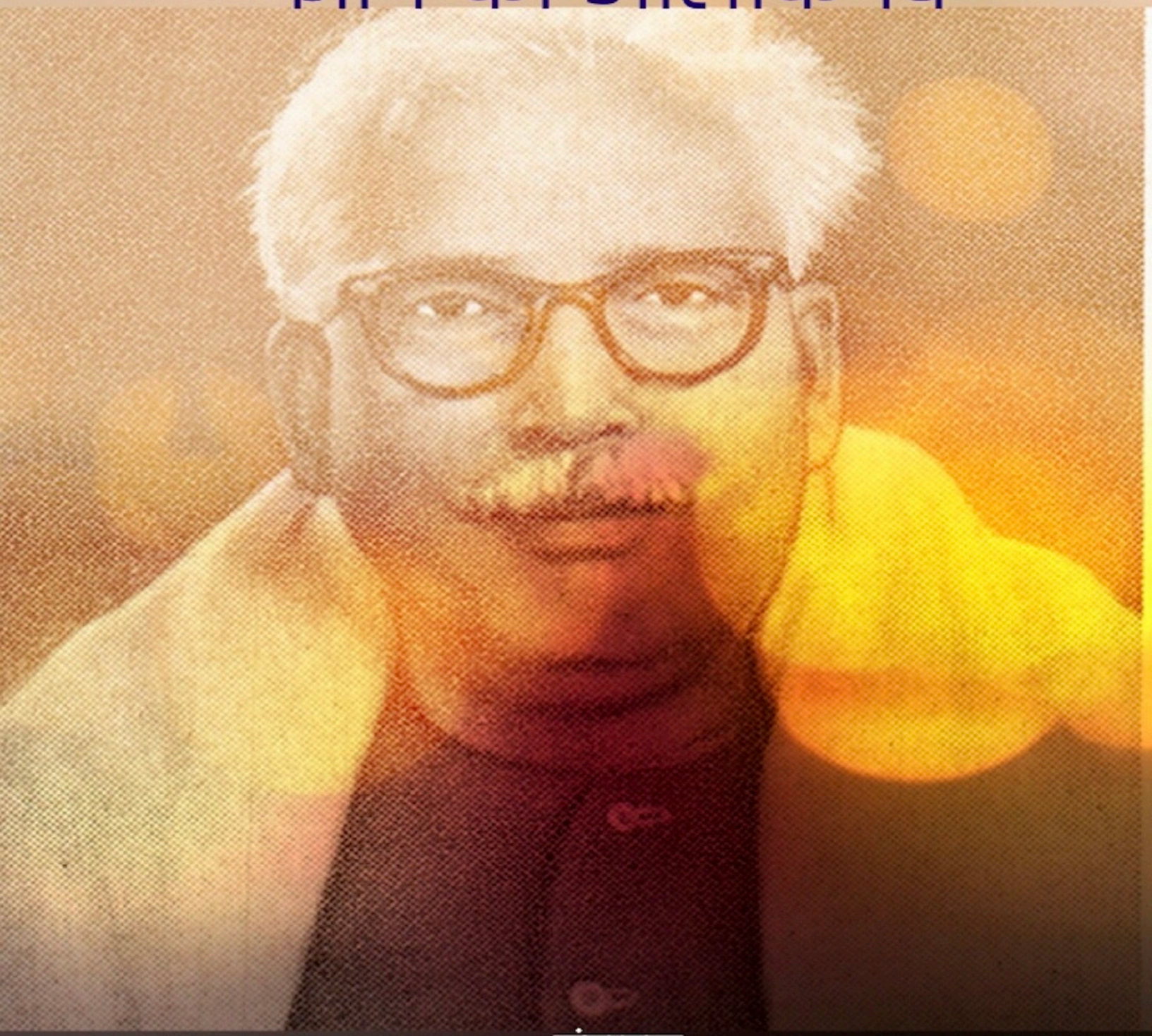

संपादक

कृपाशंकर चौबे

हजारीप्रसाद द्विवेदी: ज्ञान का आलोकपर्व

सम्पादक:

कृपाशंकर चौबे

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसम्बर, 2021

© कृपाशंकर चौबे

विषय सूची

मूल्यांकन

सूर साहित्य की भूमिका	क्षिति मोहन सेन	11
द्विवेदी जी के कबीर और कबीर के द्विवेदी जी	अब्दुल विस्मिल्लाह	22
सूर, कबीर से कविता तक	श्याम सुन्दर घोष	28
सूर साहित्य और द्विवेदी जी	श्रीकांत शर्मा 'बालव्यास'	36
संत साहित्य के अध्ययन में पण्डित जी का योग	डॉ. उमा शशि दुर्गा	40
आचार्य द्विवेदी के मध्यकालीन भारत के साहित्य का एक मूल्यांकन	डॉ. कपिला वात्स्यायन	47
सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के पुरोधा	डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर	53
सांस्कृतिक दृष्टि	डॉ. नंदकिशोर आचार्य	61
कृती विचार-पक्ष	डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र	73
गतिशील यथार्थ के हंसमुख रचनाकार	डॉ. उमेश प्रसाद सिंह	79
सिद्ध-सारस्वत आचार्य	डॉ. रामशंकर त्रिपाठी	84
एक पण्डिताई : आधुनिक और प्रगतिशील	डॉ. रामदरश मिश्र	94
आचार्य द्विवेदी का आधुनिकता-बोध	डॉ. चौथीराम यादव	101

आचार्य द्विवेदी : द्रष्टा और स्रष्टा	डॉ. विद्यानिवास मिश्र	142
पारदर्शी सर्जक का सांस्कृतिक विवेक	डॉ. गिरीश्वर मिश्र	156
ललित निबन्धकार आचार्य द्विवेदी : एक दृष्टि	डॉ. विवेकी राय	164
निबंधकार आचार्य द्विवेदी	डॉ. केदारनाथ सिंह	171
द्विवेदी जी के उपन्यास और मिथक	डॉ. दशरथ ओझा	180
युगीन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में द्विवेदी जी के उपन्यास	डॉ. सावित्री श्रीवास्तव	191
बाणभट्ट की आत्मकथा : इतिहास के आलोक में	डॉ. गोविंद जी	201
बाण के गुण-दोषों का दर्पण	भगवतशरण उपाध्याय	213
चारु चन्द्रलेख : असाध्य साधन की दारुण संकल्प-गाथा	डॉ. परेश	218
चारु चंद्रलेख की समस्या	डॉ. राधा वल्लभ त्रिपाठी	241
पुनर्नवा : रूढ़िगत परंपराओं के खिलाफ उद्दाम जिजीविषा	डॉ. अमरेंद्र मिश्र	253
नाम में क्या रखा है!	डॉ. अरुणेश नीरन	258
स्वयं निज प्रतिवाद	डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी	277
इतिहास दृष्टि	डॉ. राम मूर्ति त्रिपाठी	317
साहित्येतिहास लेखन एवं आचार्य द्विवेदी	डॉ. जवरीमल्ल पारख	324
आचार्य द्विवेदी का आलोचक व्यक्तित्व	डॉ. विश्वम्भर नाथ उपाध्याय	347

गुरु मंत्र	डॉ. धर्मवीर भारती	356
मानवतावादी दृष्टि	आचार्य विनय मोहन शर्मा	368
सहज साधना	परशुराम चतुर्वेदी	378
आचार्य द्विवेदी का काव्यत्व-१	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	389
आचार्य द्विवेदी का काव्यत्व-२	विष्णुचंद्र शर्मा	393
नारी विषयक दृष्टिकोण-१	डॉ. रोहिणी अग्रवाल	410
नारी विषयक दृष्टिकोण-२	नंदजी राम	466
आचार्य द्विवेदी की दलित चेतना	डॉ. राजमणि शर्मा	474
मेघदूत : एक पुरानी कहानी	डॉ. क्षमाशंकर पांडेय	486
मृत्युंजय रवीन्द्र : एक समीक्षा	बनारसी दास चतुर्वेदी	494
'पुनश्च' के बहाने	डॉ. केदारनाथ सिंह	497
हजारीप्रसाद द्विवेदी की भाषा-शैली	डॉ. नारायण दत्त पालीवाल	504
आचार्य द्विवेदी की परंपरा	डॉ. नामवर सिंह	510
पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी का अनुसंधान	बलराज साहनी	525
संपादन-कला	श्रीराम तिवारी	530

दस्तावेज

हिन्दी के समीक्षक पं. रामचन्द्र शुक्ल	हजारीप्रसाद द्विवेदी	534
यदि मैं लिखता	हजारीप्रसाद द्विवेदी	543
ओ निर्मम तपस्वी!	हजारीप्रसाद द्विवेदी	552
एक फक्कड़ का प्रयाणगीत	हजारीप्रसाद द्विवेदी	55
मेरा स्वप्न	हजारीप्रसाद द्विवेदी	561

काव्यांजलि

आचार्य द्विवेदी	डॉ. विद्यानिवास मिश्र	571
हजारी की हँसी	भगवती प्रसाद द्विवेदी	576

जन्मभूमि

अपने गांव की दृष्टि में	भगवती प्रसाद द्विवेदी/ प्रभात ओझा	581
मेरा छोटा भाई	विश्वनाथ द्विवेदी	592

संस्मरण

हिन्दी के वाङ्मय पुरुष	अटल बिहारी वाजपेयी	604
चिड़ियों के घर का वासी	अब्दुल बिस्मिल्लाह	607
बाबूजी	इन्दुमती ओझा	615

आचार्य द्विवेदी की शिष्य वत्सलता	डॉ. इन्दिरा जोशी	620
महामानव	उदयनारायण सिंह	623
पण्डिता: समदर्शिन:	प्रो. कल्याणमल लोढ़ा	627
होल्कर हाउस में द्विवेदी जी	डॉ. काशीनाथ सिंह	635
लालित्य की अंतरंग आभा	डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र	666
परम प्रिय बाबू जी	गिरीश चंद्र तिवारी	678
सोंधी स्मृतियाँ	जुगल किशोर जैथलिया	682
उस महागाथा का मैं भी एक एक पात्र हूं	ठाकुर प्रसाद सिंह	688
हजारीप्रसाद द्विवेदी : मनुष्य	त्रिलोचन	706
आचार्य द्विवेदी और परिमल	डॉ. जगदीश गुप्त	708
बह्मावर्त में ऋषि	धर्मपाल मैनी	712
कुछ अल्प चर्चित प्रसंग	नर्मदेश्वर चतुर्वेदी	718
आचार्य द्विवेदी को समझने के लिए	डॉ. प्रभाकर माचवे	723
मेरे प्रिय छात्र	आचार्य बलदेव उपाध्याय	733
हजारीप्रसाद द्विवेदी और कलकत्ता के साहित्यिक	प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी	738
हमारे आंगन के उल्लास थे बाबूजी	भारती मिश्र	740

शान्तिनिकेतन के पण्डित जी	मोहन लाल वाजपेयी	750
हिन्दी के हिमालय	प्रो. विष्णुकांत शास्त्री	760
महामनीषी	विष्णु प्रभाकर	776
द्विवेदी जी की गरिमा और विनोदशीलता	हरिशंकर परसाई	783
चार संस्मरण	डॉ. शिवप्रसाद सिंह	789
शान्तिनिकेतन के आचार्य	डॉ. शिवनाथ	806
अमर विषपायी आचार्य	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	812
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी और आचार्य चतुरसेन	डॉ. श्याम सुंदर घोष	820
वह धवल व्यक्तित्व	श्रीनिवास शर्मा	827
शान्तिनिकेतन से मास्को	सुरेंद्र बालूपुरी	830
आचार्य, आपकी प्रतिमूर्ति नहीं देखी	शंकर दयाल सिंह	838
हजारी प्रसाद द्विवेदी : जीवन-यात्रा	अपर्णा द्विवेदी/डॉ. विभा गुप्ता	843

अपनी बात

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व का निर्माण कई माटियों से हुआ है। उन माटियों की सुवास लिये उनकी कृतियाँ आज भी पाठकों को मुदित करती हैं। द्विवेदी जी ने अपने साहित्य में मानवता को सर्वोत्कृष्ट स्वरूप प्रदान किया है और इसी के कारण उनका संपूर्ण साहित्य जीवन की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। स्वयं रवींद्रनाथ टैगोर ने द्विवेदी जी के बारे में कहा था कि उनका ज्ञान हमलोग पाँच सौ वर्षों में भी सीख पायेंगे, कहना कठिन है। टैगोर ने यह टिप्पणी इसलिए की थी क्योंकि द्विवेदी जी ने भारतीय दर्शन, अध्यात्म, साधना, इतिहास, संस्कृति और कला को खोख डाला था और वैदिक वाङ्मय, इतिहास, संस्कृति, नीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र और काव्य शास्त्र का द्विवेदी जी ने अपने साहित्य में जितना समर्थ उपयोग किया, उतना किसी अन्य साहित्यकार ने नहीं। द्विवेदी जी ने अपने औपन्यासिक पात्रों को उनके तई अपनी बात कहने की आजादी दी और किसी नाजी साहित्यकार की तरह उनके पैरों में अपने चिंतन की बेड़ियाँ नहीं डालीं। इन्हीं कारणों ने द्विवेदी जी को स्थितप्रज्ञ करार दिया है।

द्विवेदी जी का साहित्य प्राच्य और आधुनिकता के बीच एक पुल की तरह है जिसमें पाठक को एक छोर से दूसरी छोर तक जाने की पूरी छूट है। जिस प्रकार वेद की अमूल्य ऋचाओं का अर्थ आज भी साधारणजन की समझ से परे है लेकिन समय की छाती पर

वे सशक्त शिलालेख समझी जाती हैं, वैसा ही यदि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के बारे में मैं निवेदन करूं तो यह अधिकार मुझे दिया जाना चाहिए।

द्विवेदी जी के लिए कार्य करने की ललक सभी में एक समान है इसका एहसास इस संकलन के लेखों को संकलित करने के दौरान मुझे लगातार हुआ। जिस भी साहित्यशिल्पी से अनुरोध किया गया, उन्होंने वांछित लेखकीय सहयोग दिया। हरिशंकर परसाई, विद्यानिवास मिश्र, कपिला वात्स्यायन, बलदेव उपाध्याय, विनय मोहन शर्मा, शिवमंगल सिंह सुमन, रामेश्वर शुक्ल अंचल, विष्णुचंद्र शर्मा, नारायण दत्त पालीवाल, प्रो. शिवनाथ, ठाकुरप्रसाद सिंह, मोहनलाल वाजपेयी, शिवप्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र, कल्याणमल लोढ़ा, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, कृष्णबिहारी मिश्र, परेश, धर्मपाल मैनी, एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, एन. चंद्रशेखरन नायर, जगदीश गुप्त, गंगा प्रसाद विमल, राम शंकर त्रिपाठी, उमेश प्रसाद सिंह, अब्दुल बिस्मिल्लाह, देवकीनंदन श्रीवास्तव, नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, नजीर बनारसी, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे, श्याम सुंदर घोष, सुरेंद्र बालूपुरी, दशरथ ओझा, विद्याविंदु सिंह, राममूर्ति त्रिपाठी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, क्षमाशंकर पांडेय, सावित्री श्रीवास्तव, विवेकी राय, गोविंद जी, नंदजी, उमा शशि दुर्गा, इंदुमति ओझा, इंदिरा जोशी, श्रीनिवास शर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी, विष्णुकांत शास्त्री और शंकर दयाल सिंह ने मेरे आग्रह पर नब्बे के दशक में विशेष तौर पर इस संकलन के लिए लिखा था। इस बीच हजारीप्रसाद द्विवेदी के कृतित्व पर कुछ और मूल्यवान

लेख मुझे हासिल हो गये, उन्हें भी इस संकलन में शामिल कर लिया गया है। इसके लिये प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रो. चौथीराम यादव, प्रो. राजमणि शर्मा, प्रो. रोहिणी अग्रवाल और प्रो. जवरीमल्ल पारख के हम आभारी हैं। दिनेश शर्मा और मुकुंद द्विवेदी ने दस्तावेज खंड के लिए दुर्लभ सामग्री देकर इस संकलन का महत्व निश्चित ही बढ़ा दिया है।

द्विवेदी जी के एक निबंध संग्रह का शीर्षक है—'आलोक पर्व'। हम जानते हैं कि जब भी ऋतु चक्र बदलता है तो कृषि चक्र भी बदलता है और भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति भी उसी के साथ बदलती है। उस संधि काल में तमाम त्यौहार होते हैं जिन्हें पर्व कहा जाता है। पर्व का अर्थ है-पोर। यानी गांठ। यह विकास का सूचक है। बांस में जब गांठ फूटती है तो आगे वह विकसित होता है। इसी प्रकार संवत्सर भी पर्व के फूटने पर विकसित होते हैं। द्विवेदी जी स्वयं ज्ञान के आलोक पर्व थे। ज्योति के विकास की प्रक्रिया और हजारीप्रसाद द्विवेदी की सृजन प्रक्रिया एक है। इसीलिए इस संकलन का नाम 'हजारीप्रसाद द्विवेदी : ज्ञान का आलोक पर्व' रखा गया है।

-कृपाशंकर चौबे

27 फरवरी 2015